श्रीगणेशायनमः ।

अर्ज्जुनगीता ॥

जिसमें

कलिमलग्रसित मनुष्यों के हितार्थ नाना प्रकारके गृहस्थधर्म्म सम्बन्धित धर्म्म कर्म्म अर्ज्जुनप्रति आप श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द परब्रह्म परमेश्वरने वर्णन किये हैं

वही

अत्यंत शुद्धतापूर्वक

छोटेलाल लक्ष्मीचन्द बुकसेलर बम्बई पुस्तकालय अयोध्याजी ने

बंबई टाइप में

लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस में छपवाया

अक्टूबर सन १८९५ ई० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ।

अर्ज़ुनगीता ॥

जिसमें

कलिमलग्रसित मनुष्योंके हितार्थ नानाप्रकार के गृहस्थधर्म सम्बन्धित धर्म्म कर्म्म अर्ज्जुन प्रति आप श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द परब्रह्म परमेश्वरने वर्णन किये हैं

वही

अत्यंत शुद्धतापूर्वक

बंबई टाइप में

लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस में छापा गया
अक्टूबर सन् १८६५ ई०

T

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ अर्जुन गीता भाषा ॥

दोहा ॥

मुखमुरलीकरलकुटवर, यदुपतिनन्दकुमार ।
अर्जुन गीतामहतफल, वर्णहुँ तासुविचार ॥
गुरु गणपतिपदवंदिकर, धर उरमेंविश्वास ।
गीताज्ञान सहायकछु, हृदयकरहु ममबास ॥
मुक्तिपदारथ संतहित, यह गीताकरप्रेम ।
हरियश अगम अपारहै, कहौंभेंचितधरिनेम ॥
पहले गुरुको गाइये, जिन गुरु रचा जहान ।
पानीसेजिन पिंडरच्यो, अलखपुरुष निर्वान ॥

चौपाई ॥

श्रीविष्णुः के चरणमनाओं । जेहिप्रसाद

T

गोविंद गुणगाओं ॥ श्रीकृष्ण अर्जुन रस बानी। गुरु प्रसाद कछु कहौं बखानी ॥ एक समय आये यदुराई। अर्ज्जुन संगम भो यक ठांई॥ धूपदीप लै आरति कीन्हा। चरणोदक माथे परलीन्हा ॥ हाथ जोरि अर्ज्जुनमेठाढ़े। प्रेम भक्तिउर आनँद बाढ़े ॥ संशयप्रभु इक है चितमोरे। कहहुँ सोनाथ दोऊकरजोरे ॥

दोहा ॥

तीन लोक के ठाकुर, दीनबंधु नँदलाल।
बिनती करों अधीन ह्वै, भाषो वचनरसाल ॥

चौपाई ॥

सुन स्वामी त्रयलोक भुवारा। अर्ज्जुन कछु बिनती अनुसारा ॥ सावधानह्वैयसुनो गोसाईं। मोक्ष मुक्ति कवने विधिपाईं ॥ कौन

T

कर्म्म कीन्हे गति होई । सो मोहिं कहहु न राखो गोई ॥ स्थावर जंगमादि बखानी। कीट पतंग चारिगुण खानी ॥ चारि खानि प्रभु तुमहिं बनाई । सबसों श्रेष्ठ कौन यदुराई ॥

दोहा ॥

इनमें को अति श्रेष्ठ है, सो मोहिं कहो विचार ।
चरण शरण प्रभु राखहू, होहु प्रसन्न मुरार ॥

चौपाई ॥

श्रीकृष्ण बोले बिहँसाई । यह संशय तोहिं कहौं बुझाई ॥ कहैं रसाल वचन यदुवीरा । सबसे दुर्लभ मनुज शरीरा ॥ मानुष में बड़ ब्रह्मज्ञानी । ब्राह्मणते बड़ तपसि बखानी ॥ तपस्वी सों बड़ सुनौ कुमारा । मोर नाम जेहि प्राण अधारा ॥ निशिवासर जो

T

सुमिरे मोहीं । तेहिते बड़ा और नहिं कोहीं ॥ केवल कृष्ण हृदयमो जाने । और बात कछु चितना आने ॥

दोहा ॥

एकनाम चितमोधरे, सुमिरे निशिदिनमोय।
संन्यासीब्राह्मणतपसि, तेहिपटतरनाहिंकोय।

चौपाई ॥

अर्जुन बिनवै दोउकर जोरी । बिनतीकरौं अल्पबुधि मोरी । तुम प्रभु आदि अन्त औसाना मो प्रति कृपा करो भगवाना ॥ तुम जो कहा तपसि बड़ आही । नाम भजन के पटतर नाही॥यह संशय मोहिंकहौबुझाई। श्रीमुख सुनों तो मन पतिआई ॥यहि निमित्त मैं लायउँ सेवा । कहो भेद देवन के देवा ॥

T

दोहा ॥

तपस्वी तपअधिकारबंड़,ज्ञानध्यानदृढ़सोय।
नामभजैजोप्राणिनित,तेहिसमाननाहिंकोय॥

चौपाई ॥

कहत रसाल बचन यदुराई । सुन अर्जुन तोहिं कहों बुझाई ॥ योगारम्भ सुन कुन्तिकुमारा ।तोसों बचन कहौं निरुआरा ॥ वर्षसहसदश बीतैं जबहीं। आसन दृढ़तपसी हो तबहीं ॥ अन्तर प्राणत्याग जो कोई । प्रेमपुरुष भेटे पुनि वोई ॥ पुहुपकली विकशै नहिं पाई । अन्तर बास कहांते आई॥ रामनाम सुमिरननाकरई। कहु अर्जुन कैसे निस्तरई ॥ तपसीतप सुन कुन्तिकुमारा। योग यती कर इह व्यवहारा॥

दोहा ॥

नामकि महिमा जानई , साधै योग अघोर ।
काया आछत पावही , सत्य बचनसुन मोर ॥

चौपाई ॥

अब सुन अर्जुन कहौं बिचारी । नाम भजनते सब अधिकारी ॥ राम नाम जो सुमिरन करई । भवसागर सो क्षणमहँ तरई ॥ मोरहुनाम भजै चितलाई । धर्म अर्थ विद्या फल पाई ॥ जोगृहवास अग्नि सुख पावै । प्राण अन्त बैकुण्ठ सिधावै ॥ तेहि ते अर्जुन सुन चित लाई । नाम भजनते सब सुख पाई ॥ योग महादुख कुन्तिकुमारा । तोसों वचन कहौं निरुआरा ॥ योग साध जो प्राणी धावै । तबहीं अमर परमपद

T

पावै ॥ भङ्गहोंयतो पारन पावै । जैसे मारग अन्ध भुलावै ॥ नामके महिमा कहत न आवै । क्षण यक भजे अमरपद पावै ॥ अर्जुन सांच सुनो हम पाहीं । नाम भजन समान जग नाहीं ॥ नाम भजन औ सुमिरन करई । भवसागरसों क्षणमों तरई ॥ मोरहु नाम भजै चितलाई । और करै तो सहा न जाई ॥ तेहिते अर्जुन सुन चित लाई । राम नामते सब सुख पाई ॥ रामनाम जग अहै अधारा । नाम लेत भव सागरपारा ॥ भक्त हमार प्राण हित अङ्गा । निशि दिन रहों भक्त के सङ्गा ॥ सदा फिरों भक्तनकेसाथा । शंख चक्र गदा लिये हाथा ॥ गाय सङ्ग बाछा जस रहई । क्षीरके आश

क्षणक ना जाई ॥ सुन अर्जुन समुझावों तोहीं।मोर नाम मोहन अस मोहीं॥नाम ब्रह्म चित जाने कोई । आवागमन न ताकरहोई॥

दोहा ॥

परब्रह्म निश्चयकरि, जानो कुन्तिकुमार ।
तीन लोक तारै सही, एक नाम है सार ॥

चौपाई ॥

सुनो प्रथम भाषों मैं तोहीं । नाम भजै सो भेटै मोहीं ॥ तेहिते मोर कछू ना माया । अन्त काल चित राखों दाया ॥ भक्त हमार सदा हित आहीं । चारों युग कछु अन्तर नाहीं ॥ भक्ति एक हमहीं करि देखहु । भिन्न भिन्न कबहीं जनि लेखहु ॥

T

दोहा ॥

भक्त मोर मैं भक्त कर, सुन अर्जुन ठहराय ।
एक आत्मा जानहू, तोसों कहों बुझाय ॥

चौपाई ॥

अर्जुन कहै सुनौ यदुराई । येतो जानतहौं मनमाई ॥ भक्त तुम्हैं कछु अन्तर नाहीं । यहतौ बात विदितसबठाहीं ॥ भक्त तुम्हार सदा हित आहीं । सो विचार अपने मनमाहीं ॥ संशय एक अहै यदुराई । सो मैं कहौं सुनो चित लाई ॥

दोहा ॥

जौन जौन गुण भक्तकर, इसके परे मुरार ।
सावधान होय स्वामी, सो मोहिं कहौ विचार ॥

T

चौपाई ॥

सुन अर्जुन तैं मन चितलाई । यह संशय तोहिं कहौं बुझाई ॥ सब संशय तोहिं देहुँ सुनाई । जो तुम राखो मन ठहराई ॥ भक्त हमार प्राण सम अङ्गा । निशिदिन रहौं भक्तके सङ्गा ॥ सदा भिरौं भक्तनके साथा । शंख चक्र गदा पद्मले हाथा ॥ और बात कछु कहौं बुझाई । मन बचक्रम सुन मन चितलाई ॥

दोहा ॥

मोर भक्त मोहिं चितधरै, नाम जपै दिन रात।
तेहि कारण सुन अर्जुन, छोंड़ सकौं नहिं साथ॥

चौपाई ॥

सुन अर्जुन जो पूछेउ मोहीं । औरौ कथा

T

सुनावोंतोहीं ॥ अपने मन निश्चयकै लेखहु। जैसे पिता पुत्र कहँ देखहु ॥ जेहिके घर एकौ सुत होई। विपति परे ना छांड़े सोई ॥ पुत्र बापकर जातक होई । तेहि प्रतिपाल करै सबकोई॥ सुतको पितु जो माने नाहीं। विपति परे छांड़े ना ताहीं ॥ भक्त हमार धर्म के बापू । तेहिसों अर्जुन अहै न पापू ॥

दोहा ॥

भक्त मोर जब बोलई, राम कृष्ण मुरार।
तेहि की जिह्वास्वर्गते, उत्पाति होय हमार ॥

चौपाई ॥

अर्जुन बहुरि कहा करजोरी । परब्रह्म सुन बिनती मोरी ॥ जो तुम कहा सोई परमाना । आदि अन्तमैं हित कै जाना ॥ श्री मुख

T

वचन मृषाको करई । हरि ब्रह्मा शिव मेटि न सकई ॥ मैं बुधि हीन न जानों अन्ता । बल पौरुष तुमहीं भगवन्ता ॥

दोहा ॥

दया करहु गोसाइँजू, कहत अहौंकरजोरि । तुम्हरेचरणकमलचित, सदारहैगतिमोरि॥

चौपाई ॥

कहैं गोविन्द वचन हितकारी । सुन अर्जुन मनमाहिं विचारी ॥ हरि ब्रह्मासुर-देव जो आहीं । मम भक्तनके पटतर नाहीं॥ मैं जहँ जाउँ भक्त तहँ जाई । आवरौ सुधी कोइ ना पाई॥ चन्द्र सूर्य्य वायू अरु पानी। उनहूंमहिमा मोरि न जानी॥ इनकहँ अगम कछू है नाहीं । भक्त मोर पहुँचै क्षणमाहीं ॥

T

दोहा ॥

मोर भक्त मोहिं जानई, मैं जानों तेहिवीर ।
चरणरेणु जब लागई, सो भाषो यदुवीर ॥

चौपाई ॥

सुन अर्जुन यह कथा सोहाई । आदि अन्त तोहिं कहौं बुझाई ॥ सदा मोरभक्तन मुख वासा । हिरदै बैठि करों परकासा ॥ जो कछु विष्णु मोक्ष पद आहीं । जेतिक मानुष भोजन खाहीं ॥ भक्त मोर छुये जो कोई । तुर्त प्रापती मोकहँ होई ॥ जेहिमों भक्त न लावै हाथा । उहै उच्छिष्ट कहै यदुनाथा ॥ सो हम कहँ नाहिं पहुँचै भाई । तोसों वचन कहौं समुझाई ॥ भक्त हाथजो भोग लगावै । प्रसन होयहमरुचिसोंपावै ॥

T

दोहा ॥

ब्रह्मज्ञानजो मन्त्रहै, भक्त हाथ सो आहि।
कैसहु भक्तजो पावई, भलमन्दाकछुनाहिं ॥

चौपाई ॥

सुन अर्जुन रस अमृत बानी । भक्त भाव तोहिं कहौं बखानी॥ जो कर मम भक्तन मन्दाई । ताकर बंश नाश होइ जाई ॥ तिन दिन तीन पच्च जो होई । तीन मास बांचे ना कोई ॥ इतना दिन जो बाचेकैसहु। तीन बर्षउबरे ना कैसहु ॥ जो इतने महँ दण्ड न देऊं। गदाचक्र फिर हाथ न लेऊं ॥

दोहा ॥

भक्त कष्ट मोहिं व्यापई, रोम रोम सब अङ्ग।
तेहि कारण सुनअर्जुन, छांड़सकों नहिंसङ्ग ॥

T.

श्रीस्वामी जगजीवन, दीनबन्धु नँदलाल ।
औरहु,गुण कहि भक्तकर, दया करो गोपाल ॥

चौपाई ॥

सुन अर्जुन मैं कहों विचारी।तुम तो मोर प्राण हित कारी ॥ जो हम कहहिं सत्य करु सोई । पूर्व पुण्य विनु भक्ति न होई ॥ पद्मपत्र जौने विधि बिकसे । मोर भक्त पारथसुनु तैसे॥वही भांति जब ऊदितहोई प्रेम भक्तिपद पावै सोई ॥ तेहि मह गुरुमुख सदा कराई।चरण कमल पातक क्षयजाई ॥

दोहा ॥

रिसना करो गोसाइँजू, चरण छुवतहौं श्याम।
केतिक गुरु करिये प्रभू, केतिक लीजै नाम ॥

T

चौपाई ॥

यह सुनि हर्षितभे बनवारी । अर्जुन देखो मनहि बिचारी ॥ एकै गुरु विष्णू सम आही । तीनलोकके पटतर नाही ॥ एकै नाम सदा चित देई । चौदह भुवन वश्य करि लेई ॥ गुरु सोई जो लागे काना । तेहि कहँ जानें विष्णु समाना ॥ सोई परम तत्त्व करि जाने । और बात कछु चित ना आने । गुरु के मन्त्र जो भूले कोई । मुखते सिखे दोष ना होई ॥ सत्य गुरू करिये दुइ चारी । ज्ञानगुरू सब सिखे विचारी ॥ आन गुरूमुख कान जो लागे । कोटि जन्म शिर पातक लागे ॥ चौगुण पाप गुरूको होई । माया लोभ करै जो सोई ॥ गुरु

T

शिष जाने मैं भल कीन्हा। जमके फांस हाथ मों लीन्हा॥

दोहा॥

अर्जुन कहां गोसाइँजू, कैसे जिवपति आइ।
गुरूकान जेहिलागई, सो कैसे जमपुरजाइ॥

चौपाई॥

सुन अर्जुन तोहिं कहौं बुझाई। जैसे तोहार जीव पतियाई। पुत्र आनकर आपन करई। सो प्राणी कैसे निस्तरई॥ जैसे तिया सोहागिन होई। स्वामी छांड़ि और सँग सोई॥ पहिले दुइकुल नाश करावै। जहां जाइ तहँ अपयश पावै॥ जगमो यश एको नहिं पावै। प्राण अन्त जमलोक सिधावै॥ दुइ नौका पग देइ जो कोई। मांझ

धारमो बूड़े सोई ॥ प्रथमै मन्त्र गुरू जो दीन्हा । तेहिते नेम धरम ना चीन्हा ॥ अवरो मन्त्र देइ जो कोई । तौ जग माहिं दोष तेहि होई ॥

दोहा ॥

यह सब दोष गुरू कहँ, शिषना जाने कोय ।
कुम्भी पाक नरक महँ, निश्चय प्रापत्ति होय ॥

चौपाई ॥

सुनि अर्ज्जुन निश्चय चित कीजै । कथा रसाल श्रवण सुनि लीजै ॥ नाना वेद पढ़ै जो कोई । गुरुमुख वचन समान न होई ॥ गुरु कहँ पूंछ जाय जहँ जाने । भव चिन्ता हिरदै नाहिं आने ॥ चारि वेद मुख पाठ बखानी । अन्तर गति मोहीं

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहिं जानी॥ कहत वेद सब जन्म गँवावै। नाम भजन विनु मुक्ति न पावै॥ निश्चय नाम जो चितहि लगावै। तथा यक भजै अमरपद पावै॥ काग भृशुण्ड अमरपुर गयेऊ। माया छत्र हृदय मो रहेऊ॥ बामा अङ्ग शयन जो करई। चित लगाय गोविंद सो रहई॥ अच्छे वचन न हरिके कहई॥ तेहि समान जग कोइ न अहई॥ सिद्धसमाधि लगावै कोई। नामकि महिमा जानत कोई॥ भूमि समान दान जो करई। लक्ष योजन नाम सो धरई। नामकि महिमा जानै जोई। जो जानै सो हम सम होई॥

दोहा॥

तीरथ व्रत अरु यज्ञ करि, बहुत विचारे वेद।

सहस्र योजन नामते, जाइ रहा सब भेद ॥

चौपाई ॥

जिन्ह ब्रह्मा सब सृष्टि सवांरी। नाभि कमल ते भये हमारी ॥ ब्रह्मन होय वेद सब कहई। नाम मोर हिरदै मोधरई ॥ विद्या वेद न भूले सोई। भोजन रस जाने कस होई ॥ श्वपचौ भक्त मोर जो होई। तेहि समान अर्जुन ना कोई ॥ इह पृथिवीमें कोना भयऊ। कोटि कोटि युग यहि विधि गयऊ ॥ विष्णुकि माया एहि संसारा। नाम नाश ना जाइ कुमारा ॥ सुन अर्जुन मैं कहौं बखानी। नामकि महिमा हमहुँ न जानी ॥ सुन पारथ समझावों तोहीं। नाम भजे सो भेटे मोहीं ॥

T

दोहा ॥

कहतखोरिमोहिंलागई, सुनोवचनभगवान।
तुम्हरेनामाकि महिमा, कैसे जाने आन ॥

चौपाई ॥

सुन अर्जुन तैं मन चितलाई। यह संशय तोहिं कहौं बुझाई ॥ नाना जन्म मोर जो होई। अन्त काल कहि सकै न कोई॥ अवर बात सूनो हम पाहीं। जन्म भये कछु का-रज नाहीं ॥ जहँवा भक्त मोर गुण गावे। हमहिं तहां निश्चय कै पावे ॥ तीरथ व्रत विद्या है कैसा। इन्द्रायन फल देखिय तैसा॥ आसन बैठि मोर गुण गावै। कोटि तीर्थ तेहि कहँ ना पावै ॥ लक्ष्मी सरस्वति अङ्ग मो आहीं। नामकि महिमा जानत नाहीं ॥

दोहा ॥

चन्द्रसूर्यअरुपवनजल, नवग्रहसकलनक्षत्र।
माया मोरि न जानहीं, कोटिन्ह जपैं जो मंत्र ॥

चौपाई ॥

अब सुन अर्जुन कहौं बखानी । रामनाम सम अमृत बानी॥ नाम सुमिरि शिवअम्मर भयऊ । जरा मरण के संशय गयऊ ॥ नाम कि आश वासुकी कीन्हा । तिल समान धरती तिन्ह लीन्हा ॥ रामनाम ध्रुव सुमिरण कीन्हा । पदवी अचल ताहिको दीन्हा॥ सुर मुनि जानतहैं कछु भेऊ । तेहि कारण मैं दरशन देऊं ॥

दोहा ॥

रामनाम निश्चयकरि, जानो कुन्तिकुमार ।

T

चारि वेदमों अर्जुन, दुइ अक्षरहैं सार ॥
राधारमण गोसांइजू, यदुपतिनन्दकुमार ।
कविता स्तुतिभाषऊं, प्रभुमोहिं करोउधार ॥

चौपाई ॥

श्रीगुरु विष्णुके चरण मनावों । जिन्ह प्रसाद गोविंद गुणगावों ॥ धन्यगुरू जिन्ह विद्या दीन्हा । जेहि प्रसाद गोविंदहिचीन्हा ॥ गुरू बिना कछु धर्म न होई । कोटि प्रकार करै जो कोई ॥ गुरू बिना कोइ पार न पावै । जैसे मारग अन्ध भुलावै ॥ गुरु हिरदै मों तन्तु लखावै । गुरु दयालु होइ पन्थ बतावै ॥ गुरुजैसे नाव खेवनिहारा । भवसागर पार उतारन हारा ॥ गुरू बिना कैसेकै तरई । नाव बिना केवट का करई ॥

गुरू बिनाँ अन्धा जस होई। भला बुरा चीन्हे ना सोई ॥ जो नर गुरु मुख भया न होई। मिथ्या जन्म ताहिकर होई ॥ श्रीस्वामी त्रिलोकके नायक। दुष्ट दलन सन्तन सुखदायक॥ सुमिरौं तोहिं सदासुखदायक। अन्तरगति चित जानो नायक ॥ जाकी महिमा शेष बखाने। नर वपुरा कैसे कछु जाने॥शंकर सुमिरतपार न पावै। नारदध्यान सदा गुण गावै ॥ चारो युग ब्रह्मागुणगाये। आदि अन्तको पारन पाये ॥ ऋषि मुनिवर गावैं गुण जेते। अवर देवता रागन तेते ॥ सूर्य आदि सुरपति गुण गाये। ध्रुवप्रह्लाद अमर पद पाये ॥ इन्हकर भक्ति अन्तकिन्ह पायउ। सतयुग त्रेता द्वापर गायउ ॥ क-

T

लियुगमें सन्तन सुख दीन्हा । घरबैठे प्रभु दरशन दीन्हा ॥ रामानन्द कबीर गोसाईं । इन्हकर महिमा कहि न सिराई ॥ पीपा भगत औमीराबाई।उन्हकेरीहरिभलीबनाई॥

दोहा ॥

जोजोभक्तकलिमोभये,कहँलगिकरोंशुमार । सबकी आशा पुरइन्ह, यदुपतिनन्दकुमार ॥

चौपाई ॥

मैं वपुरा जस पशु अज्ञाना । वर्णविवेक नहीं हम जाना ॥ इनकर का मैं करौं बखाना । गुरु प्रसाद कछु चीन्हा जाना ॥ गुरू मोर जो सन्मुख अहई । यह भवसागर क्षणमो तरई ॥ इन्हकर महिमा कहत न आवै । जो गुरु कहै तैस फल पावै ॥

T

दोहा ॥

जगन्नाथ गुरुदेवहैं, जिन्ह यह विद्यादीन्ह ।
जिनके चरणरेणुका, कुशलसिंह सोलीन्ह ॥

चौपाई ॥

अर्ज्जुन बात कहत बिलगाई । बीचहि कवी स्तुतीलाई ॥ कुशलसिंह भक्तनके दासा । प्रभुके चरणरेणुकै आशा ॥ वेद पुराण पढ़ा कछु नाही । ज्ञान ध्यान कछु मनना आही॥ एक समय मोहिं इच्छाकीन्हा। गुरुजू मोकहँ विद्या दीन्हा ॥ अस कछुदाया कीन्ह गोसांई । प्रभुकी स्तुति करों बनाई ॥ इतो कहत मोहिं आलस भयऊ। आईनींद भूमिपरि गयऊ॥ सोवत समय परीक्षापाई। गुरुके रूप ठाढ़ भोआई ॥ कहेसि शोच कर-

T

सि जनि वारा । इम आज्ञा करि ज्ञान विचारा ॥ चरण परसिकै सेवा कीन्हा । इह अन्तर बोध्या कछु दीन्हा ॥ उठि बैठ्योकोउ देखु न पासा । गीता ज्ञान हृदय परकासा॥ रोम रोम पुलकित भइकाया । भयो ज्ञान कछु गुरुकी दाया ॥

दोहा ॥

गुरु जो आज्ञा कीन्हेउ, गीताज्ञान अपार ।
सब मिथ्या करि जानेउ, एक नाम है सार॥

चौपाई ॥

कविता स्तुति पूरण भयऊ । कहत सुनत पातक क्षय गयऊ ॥ अर्जुन बहुत जनावे सेवा । सुनहु वचन देवनके देवा ॥ श्रीगोविन्द गोवर्द्धन धारी।गोपीवल्लभ देव मुरारी ।

श्रीत्रिलोकके अन्तर्यामी। भक्तन हेतु निरन्तर स्वामी ॥ कैसेकै गति होइ गोसाई । मोहिं सो साँच कहौ यदुराई ॥ केतिक पाप दोषकै होई । सो संशय प्रभु कहो बुझाई ॥

दोहा ॥

केतिक पाप करै नर, कवन दण्ड है ताहि।
हृदयागती बिचारिकै, प्रभु भाषोमोहिं पाहि॥

चौपाई ॥

अर्जुन सुनो कहौं मैं तोहीं । जो अति हि-त करि पूछेउ मोहीं ॥ शतः पाप प्राणी जो करई । लुंज होय यदुपति अस कहई ॥ सहस पाप मुख बाउर होई । वचन कहै बूझै ना कोई ॥ यक लख पाप करै जो कोई । कञ्चन काया कुष्ठी होई ॥ यहिबिधि पाप

T

करै दशगुना । बहिरा होइ श्रवणनहिंसुना ॥ कोटि पाप कर आंधर होई । भला बुरा चीन्है ना कोई ॥ दश सहस्र पातक जो करई। घर घर भिक्षा मांगत फिरई ॥ मांगे भीख न पावै प्रानी । ताके पाप लेखना आनी ॥ ताके पाप करै जो लेखा । सुन अर्जुन मैं आंखिन देखा ॥

दोहा ॥

जैसा पाप करै नर, तैसा तेहि सन्ताप।
श्रीमुखवचनसुनाजब, अर्जुनचितमोऽव्याप॥

चौपाई ॥

सुनि अर्जुन श्रवणन चित दीन्हा । साव-धान मन निश्चय कीन्हा ॥ इन पापनते यह गति होही । अवरौ वचन कहौं मैं तो-

हीं ॥ दुइ कोटि पाप करै जो प्रानी । स-न्तत अध अधमके जानी ॥ ताकर मुख भोरे ना देखे । महापाप अपने शिर लेखे ॥ जो मुख देखि करै असनाना । द्वादश रति सोना देइ दाना ॥ अन्तकै बात कहब ना ताही । इहमों कछु बेवरा यक आही ॥ तेहिके वचन उतर जो देई । महापाप अपने शिर लेई ॥ द्वादश स्नान करै जो कोई । तब तेहि पापते उग्रह होई ॥ शुभ कारज बोले जो कोई । निश्चय नाश काम सो होई ॥ सुनु अर्जुन जो पूछेउ मोही ॥ अपुत्रीक दोष कहौं मैं तोही ॥

दोहा ॥

अर्जुन कहा बिचारिकै, सत्य कहो यदुराय ।

T

अपुत्रीक प्राणीकर, जन्म अकारथ जाय ॥

दोहा ॥

अर्जुनसों कहहीं यदुराई । अमृतबचन सुनो मनलाई ॥ मोर बचन अंतर सुखपावै। ताहि मंत्रमैं सदा पढ़ावै ॥ अपुत्रीक धर्म अंत ना आही । सातजन्म जम दण्डै ताही ॥ औगुण कोटि कहां लगि कहई ॥ ताकर भार भूमि ना सहई ॥

दोहा ॥

महापातकी ताहिकहँ, जानो कुंति कुमार ।
जन्म जन्म दुखपावहीं, तरै न यह संसार ॥

चौपाई ॥

तब अर्जुन उठकै करजोरा । स्वामीसुनो वचन यक मोरा । बिनती मोरि सुनो भग-

थाना । सबको जानो एक समाना॥ निर्बंशी जेतिक जग आहीं । धर्मवन्त कोउ अहै कि नाहीं ॥ भला बुरा सबहै यहि ठांई । सबकर भेद कहो यदुराई ॥

दोहा ॥

उत्तममध्यमजानिकै, प्रभुमोहिंकहौबुझाय ।
तुमहिं बिना जगजीवन, आनहिं पूछोकाय॥

चौपाई ॥

सुन अर्जुन मन ज्ञान बिचारी । यह संसार तोहिं पार उतारी ॥ जो शङ्कातैं पूछेसि मोहीं । सो वृत्तान्त कहौं मैं तोहीं ॥ आपु त्री प्राणी जो होई । साधु संगतिन पावैसो ई ॥ भाव भक्ति जो चितमोंधरई । निर्मल ज्ञान हृदयमों होई । भाव भजन करई मन

T

लाई । ताकर पाप सबै क्षय जाई ॥ जहां कथा कोइ हमरि चलावै । तहां जाय निश्चय चित लावै ॥ काम क्रोधको चित नहिं धरई । ब्राह्मण गोकी रक्षा करई ॥ भक्त मोर जहँ परगुण गावै । तेहि के चरण जाय चित लावै ॥ धर्म कर्म निश्चयकै जाने । मुक्ति होय संशय नाहिं आने ॥ अन्य जीव सों दाया राखै । सत्य वचन सो सब दिन भाखै ॥ भक्ति मोरि जो मनमों धरई । नाम मोर जो सुमिरन करई ॥ हिरदै सदा मोर गुणगावै । आपुत्री बैकुण्ठ सिधावै ॥ औरौ बात कहौं मैं तोहीं । हिलै न तृण बिनु आज्ञा मोहीं ॥

दोहा ॥

अपुत्रीक सुन अर्जुन, जेतिक जगमों आहि ।

तेहिमों जो नरभक्त है,सो बैकुण्ठहिजाहि ॥

चौपाई ॥

अर्जुन कहै दोउ करजोरी । संशय प्रभुउपजै चित मोरी ॥ जन्म लो जगमो आखिरहोई । पाप किये बिन रहा न कोई ॥ तेहिते मो में भे सन्तापा । कैसे देह होय निष्पापा ॥ पापी के नाम लेहु यदुराई । ताकर पाप कवनबिधि जाई ॥ औरौ बात कहौं मैं स्वामी । तीन लोक के अन्तर्यामी ॥ गऊ बिप्र हत्या जो करई । केतिक दिनमों पुनि निस्तरई ॥ तिरिया हत्या जोनरकरई । सो प्राणी कैसेनिस्तरई ॥

दोहा ॥

यहसंशयजगदीशजू,मोहिंमनउपजीआय ।
भिन्न भिन्नकैस्वामिजू,सोमोहिं कहौबुझाय॥

T

चौपाई ॥

अर्जुन सुनो एक चित लाई। पुराबिल कथा कहौं समुझाई॥ गउ हत्या प्राणी जो करई। ज्ञान ध्यानं कीन्हे नाहिं तरई॥ तीरथ ब्रत करै तब जाई । युग बीते बिनु पाप न जाई ॥ अच्छे बचन कहे यदुराई । सुन अर्जुन तू मन चित लाई। त्रियहत्या पातक अधिकाई । चारो युग बीते क्षय जाई॥ विप्र बधन पातक अधिकाई । गीता सुने बिन पाप न जाई ॥

दोहा ॥

इनकर यह व्यवहार है,सुन अर्जुन मन लाय। ऋणहत्या अतिकठिनहै,दियेबिनानहिंजाय।

चौपाई ॥

अर्जुनसों कहहीं यदुराई । ऋणहत्या कै-
सहुना जाई ॥ दिये बिना सो छूटत नाहीं
तेहि में एक बेवरा आही । साधु पुरुष
ऋण काढ़ै कोई ॥ दण्डभण्ड करि बाचे
सोई । हममें लीन प्राणि जो रहई ॥ ऋण
चिन्ता निशि बासर करई । साधु संग
मोरे गुणगावै ॥ प्रेम भक्ति हिरदयमें लावै।
एक चित्त जो मोपर राखै । भला बुरा
मुखते नहिं भाखै ॥ भाव भक्तिकै सेवा
लावै । मांगै द्रव्य अवर कछु पावै ॥ जेहि
विधि ऋण ते उग्रह होई । निशि बासर
उद्यम करु सोई ॥ बिधि कारज सोऊ ग्रह
करई । कछुमो कछु ऋण सोधत रहई ॥

T

द्रव्य होइ उद्यम करु सोई । जो कछुजुरे सो देइपहुँचाई ॥ छांय धूप ऋण होय न पारा । तेहिको दोष न अहै कुमारा ॥ जेहि के चित्त सदा अस आही । टूटे ऋण चिन्ता कछु नाही ॥ साहु सों सांच रहै मनमाही । मन्दा होय तो पहुँचै ताही ॥ तेहि प्राणी कहँ जम ना लेई । अगिला जन्म सुखित सों देई ॥ साहूकर जो धरता होई । अवर जन्म ऋण पावन सोई ॥ साहु जो ताकर धरता होई । तो पाये खाये सुख सोई ॥

दोहा ॥

ऋणकर यहवृत्तान्तहै,सुन अर्जुनचितलाय।
जहां आश है जाहिकर, तहां देउँ पहुँचाय ॥

चौपाई ॥

अर्जुन कहै सुनो भगवाना । यह तो उत्तम कर परमाना ॥ उत्तम बुधि ऋण करजा होई । पुनि उत्तम गति पावै सोई ॥ ऋण काढ़ै अरु पापी जाना । सो कस गति पावै भगवाना ॥

दोहा ॥

धर्मवन्त ऋण काढ़ई, पायउँ ताकर अन्त ।
पापी जन जो लेइ ऋण, कहो तासु बिरतन्त ॥

चौपाई ॥

अर्जुन सुनो एक शुभ बानी । यह वृतान्त तोहिं कहो बखानी ॥ ऋणको काढ़ दान देइ कोई । मिथ्या अहै उचित ना सोई ॥ ऋण काढ़ै पालै परिवारा । सो मिथ्या नहिं

T

जाय कुमारा ॥ ऋण खाये झूठापन करई। नीच प्रसंग त्रिया पर हरई ॥ चीकन चाकन फिरै उतङ्गा । नारी छाँडि वेश्यासङ्गा॥ साहुको आवत देखै जबहीं । बदन छिपाय रहै पुनि तबहीं ॥ खाय खाय पियै ऋण देन न चाहै । जमकर फांस निशा दिन रहै॥ जमकर दूत सदा सँग रहई । थोरे दिनमों सो प्राणी मरई ॥ प्राण अन्त तेहि जम ले जाई । तेहिकर स्तुति करे बनाई ॥ चामर कोड़ा कंठलगावै । पन्थमाहँ घिसिलावत लावै ॥ पहिले लै सेमरमों बांधे । तप्त फार तेहि मुखमों साधे ॥ लोहाकि लाठीसों पिट वाई । अंग अंग काटा चुभि जाई ॥ तहँवांते पुनि ताहिलेआवे । तावा पर तेहि आनि

बिठावे ॥ तेहिके तर पुनि आगि लगावै । ऊपर तेल आनि ढरकावै । कष्टअनेकदेहि तेहिभारी। नरककुंडमें राखहिडारी ॥

दोहा ॥

केतिकदिनतोहिनरकमहँ, तहँतेकाढ़पुनिलेहि दण्ड भण्ड पुनि करके, जन्मनीचघरदेहि॥

चौपाई ॥

पुनि यह जगमों सो निस्तरई । धरताहोय तबहि वहि भरई॥ अवर बात सुनकुन्तिकु-मारा। तेहि प्राणी कर यह व्यवहारा॥ सुन अर्जुन अवरो कछु भाखों । मैं तोहिंसों कछु अन्त न राखों ॥ आधा अंग मोर तैं आही । तेहिते अन्त कहौं तोहिं पाही ॥

T

तीन लोक मोरे ऊदर माही। सबकर तन्त्र मन्त्र मोहिंपाही॥ यह संसार जहां लागि होई। मम आज्ञा बिनु अहै न कोई॥ नित उठ भोजन सबको देऊं। सबकी खबर सांझको लेऊं॥ जौन अहार जन्तु जो खाई। ताकर तैसन देउँ पहुँचाई॥ मम आज्ञा बिनु आन न पावै। कोटि भांतिनर युक्ति उपजावै॥ सबके आश हमारी आही। सुन अर्जुन तोसों सात कहही॥ कीटपतंग मों बासहै मोरा। शंखचक्र लक्ष्मी लिये कोरा॥ जहँ लगि जीव जगतमों होई। छोटा बड़ा बचैना कोई॥ सबके घटमों मोर बसेरा। धर्म्म पापके करों निबेरा। छोट जीव में छोटबसेड़ा। बड़ेजीवमोंबड़ोबसेड़ा॥

दोहा ॥

एक आत्मा जानहू, दूसर तिहुँपुर नाहिं ।
कहींगुप्तकहिंप्रगटहै,सुनअर्जुनचितमाहिं ॥

चौपाई ॥

अर्जुन कहै दोउकर जोरी । आदि अन्त शरणागतितोरी ॥ श्रीयदुपति त्रिभुवनके करता । दुष्ट दलन संतन दुखहरता ॥ आदि अन्त भक्तन भयहारी । सबमों व्यापित देव मुरारी । जो तुम कहा सोइ मैं जाना । औरहु कथा कहो भगवाना ॥

दोहा ॥

धर्म जन्म कवने विधी, कैसे जन्मे पाप ।
सोस्वामीकहिदेवमोहिं, उपजैबड़सन्ताप ॥

T

चौपाई ॥

अर्जुन बात कहां लगि जानसि । खोजि खोजि अर्थ सब आनसि ॥ जवनि बात तैं पूछहि मोहीं । सबकर भेद कहौं मैंतोहीं ॥ धर्म जन्म जेही विधिहोई । सुन अर्जुनबर्णौं मैं सोई ॥ सत्यते धर्म उग्र यश होई । दया करै तो जन्मै सोई ॥ क्षमाते धर्म बालयश रहई । लोभ तेजतो बैठतअहई । काम बस्तु सम्पूरण होई । उत्तम गति पावै पुनि सोई ॥

दोहा ॥

अर्जुन कहा गोसाइँजू, संशय छूटत नाहि ।
लोभकामसंसारमों, कवनकरतप्रभुआहि ॥

चौपाई ॥

जो अर्जुन तैं पूछसिमोहीं । निर्णय याहि

सुनाओं तोहीं ॥ कामी पुरुष जगतमोंहोई। त्रिया आपनी भोगै सोई ॥ पर तिरियाके संग न जाई। सांचे बचन कहै यदुराई ॥ माया अपनी खाय खिलावै। परको देखि न चित्त डोलावै ॥ यह दुइ पाप संपूरण होई। सुन अर्जुन निश्चय चित लाई ॥ प्रथमै पाप क्रोध जनवावा। दया बिना सो बड़ा कहावा ॥ इतना जानि नहीं जो माने। अर्जुन सो चण्डालहि जाने ॥

दोहा ॥

यहि विधिजानोअर्जुन, पाप पुण्यउतपात।
तैं तो मोर प्राण हित, कहौं भेद बहुभांत ॥

चौपाई ॥

अर्जुन ठाढ़भये प्रभु आगे। श्रीगोविंदके

T

चरणनलागे॥श्रीयदुनाथराखमोहिं लीजै। यह संसार पार प्रभु कीजै॥ एक बात कर संशयआही। रिसना करब कहउ हमपाही॥

दोहा॥

वेदन बिषे बिचारिकै, मोहिं कहो नँदलाल। कवन कर्मके कीन्हे, प्राणी हो चण्डाल॥

चौपाई॥

अर्जुन सुनहु कहत भगवाना। इतनी बात सुनो परमाना॥ ब्राह्मण ब्रह्म कर्म नहिं राखै। देवलोक सबही प्रति भाखै॥ बिना दतूउन भोजन करई। तेहि चण्डाल यदुपति अस कहई॥ देवता पूजे बिना पगु धोये। अर्जुन सुन चण्डाल है सोये॥ जाकर मातु पिता वृध होई॥ सेवा करे

पुत्र ना सोई। ताही कांहिं मृतक कै जान
हु। अर्जुन सो चण्डालकै मानहु॥ पूरण
गर्भ त्रिया भै आई। ताकर पुरुष संगति
ह करई॥ हत्या तुल्य पाप है ताही। अ
र्जुन सुन चण्डाल सो आही॥ आग ल
गावन देइ जराई। सुरापान निशि वासर
खाई॥ महापाप निश्चयकै जाना। सो अ
र्जुन चण्डाल समाना॥ बाछा गाय बिछो
ह करावै। सो प्राणी चण्डाल कहावै॥
अर्जुनसों कहहीं नंदलाला। पच्छिनमों कागा
चण्डाला॥ पशुवनमों गदहा को जानी।
वनस्पतिनमों तार बखानी॥ पानी पियत
गाय खेदावैं। सो प्राणी चण्डाल कहावैं॥
तेल लगाय न कर स्नाना। सो प्राणी

चण्डाल समाना ॥ रतिकरि जो नकरैस्नान। सो प्राणी चण्डाल समाना ॥ सुनुअर्जुन जो पूछेउ मोही । यह तो भेद कहा मैं तोही ॥

दोहा ॥

अर्जुन कहा गोसाइँजू, यह जानत कछु नाहिं। कवन दानके दीन्हे, कवन पुण्य है ताहि ॥ अधमउधारन स्वामिजू, निश्चलनाम तोहार। तुमहीं जगके जीवन, प्रभु मोहिं करो उधार ॥

चौपाई ॥

श्रीगोविन्द युक्ति उपजाई । अर्जुन पूछ्यो कथा सोहाई ॥ हित करि अर्जुन पूछेउ मोहीं । दान कि विधि सब भाषौं तोहीं ॥ दश गउ दान देइ जो कोई । धेनु एक दीन्हे फल होई ॥ दश धेनु दान देइ जो कोई ।

सांड़ एक दीन्हे फल होई ॥ दश सांड़ दान देइ जो कोई। व्यापीख एक दिये फल होई ॥ दश व्यापीख दान करजोई। कन्या दान दिये फल होई ॥ दश कन्या दान देइ जो कोई। बिगहा भूमि दिये फल होई ॥ दान ध्यान कहि ज्ञानके लेखा। आसन जप कर सुनो बिशेखा ॥

दोहा ॥

जेतिक दान करै नर, तेहि फल पावै सोय।
शालग्राम के दान सम, और दान ना कोय ॥

चौपाई ॥

तेहि क्षण अर्जुन सेवा लाई। दानकिविधि जाना यदुराई ॥ जो श्रीमुख प्रभु कहा बखानी। सो मैं जानेउँ शारङ्गपानी ॥ श्री

T

यदुपति त्रिभुवन के करता । पतित पावन दलिद्र दुख हरता ॥ उरधरि नाम पतित तरिजाई । आवागमनसों जाय नशाई ॥ होय प्रसन्न शरण मोहिं राखहु । बिनती करौं अवर कछु भाखहु ॥ काहे कर आसन प्रभु होई । नाम तुम्हार करै जप सोई ॥

दोहा ॥

काहे कर आसन करै, जपै तुम्हैं रघुबीर ।
भिन्न भिन्न कै स्वामी, सो भाषो रघुबीर ॥

चौपाई ॥

सुन अर्जुन निश्चयकै भाखौं । मैं तोहिं कहँ हिरदै मों राखौं ॥ आसनकी विधि पूछेउ मोही । सो सब भेद कहौं मैं तोहीं ॥ बस्तर आसन ध्यान लगावै । दुखी होय कछु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फलना पावै ॥ पत्थर आसन जपै जो कोई । अर्जुन सुनो सो रोगी होई ॥ भूमि आसन जपै मोर नामा । वहि कर पाप पुण्य नहिं ठामा ॥ यहि आसन कर यह गुण होई । निश्चय अर्जुन मानोसोई ॥ अवरो आसन सुनो कुमारा । उत्तम गति पावहि संसारा ॥ मृगछाला आसन बैठावै । करै भजन मुक्तिःगति पावै॥तेहिपर बैठ जपै मम नामा । सुत कलत्र देऊँ धन धामा ॥ मुनिनकेर आसन जो आही । मानुष महिमा जानत नाही ॥ कुश आसन जो ध्यान लगावै । ज्ञानी होय सिद्ध फल पावै ॥ कमलासन जपकरता कोई । नेम धर्म विद्या फल होई ॥

T

दोहा ॥

तब अर्जुन मनशोचिकै,कहा सुनो यदुराय।
सदा सँयोग न पावै, ताकर कवन उपाय ॥

चौपाई ॥

श्रीहरि अर्जुन कह समुझाई। सदा संयोग आसन नाहिं पाइ ॥ तेहिकर एक अहै परकारा। सो मोंसे सुनु कुन्तिकुमारा ॥ तृण यक जहां तहांते आने। द्वादश अंगुल नापे प्रमाने॥ तेहिकर आसन करैकुमारा। बैठ जपै तहँ नाम हमारा ॥

दोहा ॥

अर्जुन कहा गोसाईंजू, इतना करै तो होय।
भक्ति भावजो जानही,तबहिं उचित है सोय॥

T

चौपाई॥

अर्जुन पूछै दुइ कर जोरी। औरो कछु बिनती प्रभु मोरी॥ आसन विधि पूछउँ भगवाना॥ तुम परसाद भेद कछु जाना॥ भजन भेद भाषो यदुराई। भला मन्द जैसा प्रभु होई॥ कवने माल कवन गुण होई। सो स्वामी मोहिं कहो बुझाई॥ केतिक माला भजन तोहारा। सो मोहिं भाषो नन्द कुमारा॥ जौने माल जवन गुण होई। दयाकरो प्रभु भाषो सोई॥

दोहा॥

सुनो स्वामि जगजीवन, यदुपतिनन्दकुमार।
भजन भेद नहिं जानहूं, श्रीमुख कहो बिचार॥

T

चौपाई ॥

सुन अर्जुन निश्चय चित लाई । भजन भेद तोहिं कहौं बुझाई ॥ अंगुरी रेखा भजन जो करई । अष्टगुणा फल प्रापति होई ॥ मोति माल जो सुमिरे मोही । द्वादश गुण फल प्रापतिहोही ॥ शंखमणि माला सुमिरे जो कोई ॥ पन्द्रह गुण फल प्रापति होई॥ कमल माला जपै जो कोई । सहस्र गुण फल ताकर होई ॥ सुवरण माला स्तुति लावै । एक कोटि फल ताकर पावै ॥ कुश गांठि माला जप जो करई । दश कोटि गुण ताकर अहई ॥ पदुम फल माला जपै जो कोई । बारह लक्ष तेहिके गुण होई ॥ रुद्राक्ष मालाजपै जोकोई । बारह कोटिफल

पावैसोई ॥ तुलसी माल जपै फल पावै।सो अर्जुन मोहिं कहत न आवै ॥ हिरदै अन्तर सुमिरण करई॥तेहि समान अर्जुननाकहई॥

दोहा ॥

भजनभेदसब भाषेऊं,सुनअर्जुनचितलाय ।
अवरहु कछु जो पूछहू, सो मैं देउँ बताय ॥

चौपाई ॥

अर्जुन कहे सुनो बनवारी । अवरो कहौं पिताम्बरधारी ॥ केहिके छुये दोष होय स्वामी । सो विचार कहो अन्तर्यामी ॥ मैं अज्ञान कछु अन्त न जाना । तुम प्रसाद पाई बुधि ज्ञाना ॥

दोहा ॥

प्रसन होय प्रभु भाषहू, हृदय करो जनि रोष।

T

केहिके छुये कवन विधि, तब तेहि लागै दोष॥

चौपाई॥

अर्जुन सुन तैं मन ठहराई। यह संशय तोहिं कहों बुझाई॥ माखी विष्णु अंश जो आही। तेहि बैठे कछु दोष न आही॥ देवनके भोजन छुइ जाई। ह्वै निश्चिन्त सो भोग लगाई॥ भक्षाभक्ष मजारी खाई। ओही मुख भोजन छुइ जाई॥ यहि बात नकछु दोष न आवै। होय निश्चिन्त सो भोग लगावै॥ नीच नारि संग शयन जो करही। अंत मिले कछु दोष न आही॥ बात कहत मुख थूंक जो परई। तोहिपर दोष कछू नहिं अहई॥ हाथ एक तृण राखे

जोई । चण्डाल धरै ब्राह्मण धर सोई ॥ अर्जुन सत्य सुनो हम पाही । तेहिकर दोष कछू ना आही ॥ अर्जुन कहै सुनो भगवा-ना । एक वृक्ष पर अच्छोपजाना ॥ ब्राह्मण चढ़ै शूद्र चांढ़िजाई । ताकर दोष कहो हम पाई ॥ अर्जुन बात सुनो हम कहई । तेहि कर दोष अछू ना अहई ॥ नाव एक दिशि हांडी जो होई ॥ अन्नराध खाय जो कोई । तेहिमों दोष कछू ना होई । निश्चय वचन कहै यदुराई ॥ ब्राह्मण केरि त्रिया जल देई । अछोप अपने बासन करि लेई ॥ दोष न अहै कृष्ण अस कहई । द्वादश अंगुल बीच जो रहई ॥ सेज भूमि पर सोवत रहइ । एक चण्डाल एक शूद्र

जो होई ॥ गाजो पीठपर बैठ रहे सोई। ताकर दोष कछू ना अहई ॥

दोहा ॥

जो कछू पूछेउ अर्जुन, सो मैं दीनबताय। धनितोहारिजगमहिमा,सबगुणबसेउरआय

चौपाई ॥

अर्जुन बात सुनो चितलाई। राम नामते सब सुख पाई ॥ निश्चय नाम हृदयमों जाने। और बात कछु चित ना आने ॥जो जाने मोहिं हिरदे माही। ताकर धन्य हृदय तनु आही॥जो प्राणी मोहिं चित नहिंलावै। मृतक समान मोहिंकहँभावै॥असुरनके नाम बिषहोही।बहुतबात कहोंका तोही॥साधूसङ्ग अलभसुख पावै।देखतही दुख शूल नशावै॥

दोहा ॥

अर्जुनछोड़्योकपटसब, भज्योभक्तिभगवंत।
आधाअङ्ग हमारहै, तबभाष्यों सब अंत ॥

चौपाई ॥

अर्जुन कहै सुनो भगवाना । तुमहिं छांड़ि जानों ना आना ॥ नाम अधार अहै प्रभु मोरे । निशिवासर सेवों करजोरे ॥ मोहिं सेवक जानो मनमाही । अवरो यकशङ्का प्रभु आही ॥ पाप पुण्य सब यहिसंसारा। स्तुतिको करि सकै तोहारा ॥ इन्हकरभेद कहोयदुराई । जिन्हकरवंशनाशहोइजाई ॥

दोहा ॥

कवन पापते स्वामिजू, वंशनाश होइजाय ।
कृपा करो गोसाइँजू, सोमोहिंकहोबुझाय ॥

T

चौपाई ॥

सत्य बचन सुन कुन्तिकुमारा । यहि बातन करकरो बिचारा ॥ जौन त्रियाके सत ना रहई । निशिदिन पर पुरुष मन धरई ॥ श्री स्वामी कहँ चित नहिं लाई । बात कहत उत्तर ना देई ॥ पहिले दुइकुल अपयश पावै । प्राण अन्त यमलोक सिधावै ॥ अवर कथासुन अर्जुनसोई । वंशनाशजेहि कारण होई ॥ सत्यबचन बोले नहिंप्यारा। चितमों बसै सदा परदारा ॥ सभा बैठि परनिन्दा करई । कान लगाइ ठाकुरसों कहई ॥ पर धन काढ़ द्रव्यजो देई । सो सन्ताप अपने शिर लेई ॥ जेहि लेइ देइ सुखसों खाई। इन्हकर वंश नाशहोइजाई ॥

अर्जुन कहै सुनो यदुराई । ठाकुर होयजो करै मन्दाई ॥ ऊंच नीच ना करै बिचारा। सदा अनीति रहै परदारा ॥

दोहा ॥

परजाहिं सदासतावई, पापपुण्यनहिंजान ।
नाशबंश होयताहिकर, सुनअर्जुनअज्ञान ॥

चौपाई ॥

अर्जुन सुनो एक चित लाई। जेहि घरगाय होयँ अधिकाई ॥ गर्व करै तो सकै न हेरी । रोग व्याधि जो गायन परी ॥ ताकर बंश नाश होइ जाई । सुन प्रथमै तुम मन चित लाई ॥ सुन अर्जुन जो पूछो मोहीं । आदि अन्त समुझावों तोहीं ॥

T

दोहा ॥

अर्जुन कहा गोसाइँजु, पायउँ सबकर अन्त ।
पांचरत्न जगकहतहैं, बर्णहु सो भगवन्त ॥

चौपाई ॥

श्रीगोविंद कहै शुभ बाणी। सुन अर्जुन तोहिं कहौं बखानी ॥ ठाकुरहै सबको सुख देई । दुखसङ्कट अपने शिरलेई ॥ मीठ वचन सो सबदिन भाखै ॥ दाया धर्म हृदय मों राखै ॥ भाव भक्ति सों भाषण करई । करै सहाय वचन शुभ कहई ॥ अकालपरे प्रजा प्रतिपारे । दुःखपरे तो सतना हारे । शक्तिहोय तो देइ पहुँचाई। आशा निराश कबहुँ ना जाई ॥ ब्राह्मण गाय की रक्षाकरई। नेम धर्म अपनेमन धरई ॥ उत्तम नारिगांव

मों देखै। जस कन्या अपने घर लेखै॥ डंड भंड करि कछु न लेई। पापी कै द्रव्य कैसहु ना लेई॥

दोहा॥

यहिलक्षण करठाकुर, भक्तिभाव कछुजान।
एकरत्न सो अर्जुन, सत्य कहै भगवान॥

चौपाई॥

अवर रत्न सुन कुन्तिकुमारा। तोसौं वचन कहौं निरुआरा॥ जौन त्रिया निश्छलचित होई। धर्म कर्म चित राखै सोई॥ स्वामी केरि करै नित पूजा। और पुरुषनहिंजाने दूजा॥ माता पिता स्वामी कर होई। आपन करिकै जानै सोई॥ ब्राह्मण गाय देव समजाने। भक्तिभाव करि आदर माने॥

T

भक्तन देखि विष्णु समजाने । यह अप
ने मन निश्चय आनै ॥ भिक्षुक आवे नि
राश न जाई । जो कछु जुरे सो देइ पहुँ
चाई ॥ पतिव्रता सो सती कहावै । आपु
तरै दुइ कुल तरिजावै ॥

दोहा ॥

इहलक्षणकरभामिनी,सुनअर्जुनचितलाय।
एक रत्न सो जगतमहँ, सत्य कहै यदुराय॥

चौपाई ॥

अर्जुन सुनो कृष्ण अस कहई । अवरो रत्न
पृथ्वी मों रहई ॥ जौन नरा रण होवे शूरा ।
धीरज साहस मुखको पूरा ॥ ताकर स्वामी
जो रणमहँ हारे । स्वामी कर सङ्कट सो
टारे ॥ लागै घाव न माने हारी । सङ्कट

T.

परे न देवै गारी ॥ जियत रहै तो फरले आवै । जूझै स्वामी कार्य सिधावै ॥

दोहा ॥

एक रत्न इह शूरमा, अर्जुन जानौ सोय ।
जियत जगतयश पावै, मुये मुक्तिगति होय ॥

चौपाई ॥

सुन अर्जुन जो पूछेउ मोहीं । अवरौ रतन कहौं मैं तोहीं ॥ भागवन्त पूरुष जगमों कोई । अन्नधन्न संपूरण होई । प्रथमै सा वधान गृह रहई । अहङ्कार कबहूं ना करई । आपन कुटुम जहां लगि जाने । माया गर्भ बीचना आने ॥ भाइ बंधु आवै जो कोई । यार दोस्त बैरी किन होई ॥ बाहर के आवैं मेहमाना । ताको बिदा करै सन्मा-

T

ना ॥ सब कर आदर करै बनाई । बिदा करै बहु प्रीति बढ़ाई ॥ दुखित देखि चित दाया करई । भक्ति हमारि हृदय मों धरई ॥ गो ब्राह्मण देव न समजाने । कुल कुटुम्ब लाज ना आने । भक्तहि देखि विष्णु सम पूजै । अवर देव नहिं जानै दूजै ॥ पर निन्दा परवाद न जाने । पर तिरिया कहँ जननि समाने ॥ नेमरु धर्म दान कछु करई । कछु कछु वेद पुराणो सुनई ॥

दोहा ॥

यह लक्षण धनवन्त कर, सुनहू कुन्तिकुमार ।
एक रत्न जग जानिकै, निश्चय इह संसार ॥

चौपाई ॥

इतना भक्त मोर जो आही । सो तुम जा

T

नत हौ मनमाही ॥ तेहि कर कामैं करौं बखाना । मैं अपने मन तेहिको जाना ॥ नाम हमार जपै दिन राती। ताकहँ जानो तुम बहुभांती ॥

दोहा ॥

जहँलगि सिरजा स्वामी,सबकै आशतोहार।
तेहिमों कवनश्रेष्ठप्रभु,सोमोहिंकहौविचार॥

चौपाई ॥

सुन अर्जुन प्राणी जेते आही । जेहिहित मोर कहौं तोहिं पाही ॥ अन्नदान दुर्भिक्ष मोंकरई ॥ सो प्राणी मोरे चित रहई। त्रीया सती जगत् भई कोई। मोरे चितमों व्यापै सोई । रणमों शूर जूझ कोइ जाना ॥ सो मोहिं सांच कहो भगवाना ॥

T

दोहा ॥

यह प्राणी जो अर्जुन, सो तो बसै मोरे चित्त।
अवरोएकमैंजानो,जोऋणसोंरहेनिःचित्त ॥

चौपाई ॥

तब अर्जुन मन कीन्ह बिचारा। अस्तुति करि बिनती अनुसारा ॥ बिनती मोरि सुनो यदुराई। व्यासजन्म सुनते सुधि आई ॥ ब्रह्माकर नाती सो आही। तुमसों भेद छिपा कछु नाही ॥ यह संशय मोहिं नन्दकुमारा। केवटतनय कहै संसारा ॥

दोहा ॥

आदि पुरुष तुम स्वामी,जानो सबकर अन्त।
व्यासदेव केवट तनय, कह्यो कवन बिरतन्त ॥

चौपाई ॥

सुनु अर्जुन समुझावों तोहीं । कथा पुरातन पूछेउ मोहीं ॥ यह संशय ताहिं कहों बुझाई । तो तो मोर मौसी सुत भाई ॥

दोहा ॥

व्यासजन्मतोहिंभाषों,सुनुअर्जुनचितलाय। अष्टादश पुराणकर, मूलधामते आय ॥

चौपाई ॥

श्रीगोविंद प्रकाश तब कियऊ । व्यास जन्म जवनी विधि भयऊ ॥ सरयुनदी पश्चिमते आई । आपन रूप धरे यक ठांई ॥ ताहि समय गृह राजा गयऊ । विधिसंयोग भेट तहँ भयऊ ॥ युवती रूप देखि नृप मोहा । कीन्हहुँ इन्ह कहँ कीन्ह बिछोहा ॥

T

राजा पुनि ताकहँ धरि लीन्हा । हर्षवन्त होय रतिरस कीन्हा ॥ राजा बहुरि अन्तहपुर गयऊ। केतिक दिन यहि बातन भयऊ॥ कन्या देवनदी मैं जाई । राजाकहँ दीन्हापहुँचाई ॥

दोहा ॥

सो निरवंशी राजा, हित करि कन्या लीन्ह । सोपुनिजाय अंतहपुर, आनन्दबधावाकीन्ह

चौपाई ॥

अर्जुन सुनो मोरसतभाऊ । गर्भभवनकन्या करनाऊ ॥ बर्ष सात की भई कुमारी । वर चिन्ता नृपमनहि बिचारी ॥ दासरामराजा यक आही । कन्या कहँ पुनिताहि बिवाही ॥ करि बिवाह राजा लैगयऊ । योवनवती त्रियाजब भयऊ ॥ आश्विन मास पक्ष उजि-

आरा । पितृ काज करही संसारा ॥ जेहि दिन पितृकाज नृप होई । तेही दिन रजवति भै सोई ॥ सुनि राजा जिव चिन्ता लाई । दरवानी कहँ लीन्ह बुलाई ॥ पण्डितकहै ले आवहु जाई । ब्राह्मण कहै करो सो भाई ॥

दोहा ॥

पण्डित विप्रबोलइकै, भाषासबव्यवहार ।
पितृकाजत्रियरजवती, तेहिकरकवनबिचार

चौपाई ॥

ब्राह्मण कहै पितृकर काजा । बर्ष रोज मो आवै राजा ॥ आजुहि पितृ काज नृपहोई । अवर लग्न धरि सकै न कोई ॥ राजा कहा ढील अबनाही । करोसमान सबैकछु आही ॥ पितृ काज जब विप्र लगाये । राजा तुरित

T

शिकारहि जाये ॥ अर्जुन सुनहुविधि संयोगा। हरिणा हरिणि करै रसभोगा ॥ देखत मोहित भयउ भुआरा। कन्द्रपत्रासित भै तेहि बारा ॥

दोहा ॥

दोना एक बनाइ नृप, बीजधारा तेहि माहिं।
चीलह एक बुलाइके,सौंपि दीन्हतेहि पाहिं॥

चौपाई ॥

राजा कहै चीलह लेजावहु। राखन रानी कहँ पहुँचावहु ॥ कहेउ बीज राखहु ऐसोई। गर्भ रहै तो बालक होई ॥ इहि विधि चीलह तुरत लेजाई। नदी बीच एक औरै आई ॥ एक चीलह ऊपरते आई। दोना आधा फार ले जाई ॥ दुइ बुन्द बीज सरित

T

च्योपरेउं । मछली एक ताहि लीलि गयउ गर्भवन्त मछली भै आई । खेल शिकार राजा गृह जाई ॥ पितृकाज तब कीन्ह भुवारा । जो कछु राजनके बेवहारा ॥ इहि बातन कछु अन्तन परी । केवट जाल मछलिसो धरी ॥ लै मछली राजाकहँ दीन्हा । राजा बहुत प्रेम करि लीन्हा ॥ कहिन कि मछली उत्तम आही । जेवन हेतु बनावहु ताही ॥ लेके मीन बनावन गयऊ । तब यक बालक कन्या भयऊ ॥ हँसि कैबालक भाषोतबहीं । बोले नृपजो राखहु अबहीं ॥ दासी नृप तब अचरज कीन्हा । मछली गर्भ उत्तर कसदीन्हा ॥ राजा मछली फेर मँगावा । अपने आगे बैठ चिरावा ॥राजा निरखिदेख

T

ही ताही । यक बालक यक कन्या आही । राजा बहुत हर्ष मन कीन्हा ॥ बालकले रानी कहँ दीन्हा । केवटकहँ नृप लीन बोलाई । कन्या लेके ताहि सौंपाई ॥ आपुत्री केवट सो आही । कन्या देखि हर्षमन माही ॥ जो बालक राजा लै राखा । मच्छ नारायण नामतेहि भाखा ॥ राजाभयउ राजके अन्ता । अब सुन कन्या कर बिरतन्ता ॥ कन्या रत्न जो केवट लीन्हा । भगवती नाम ताहिको दीन्हा ॥

दोहा ॥

तेहि कन्याकहँ अर्जुन, केवट अस मन दीन्ह ।
जीव आतमाजानिके, सेवाबहु बिधिकीन्ह ॥

चौपाई ॥

सेवा करत बहुत दिन गयऊ । यहि विधि वर्ष सातकै भयऊ ॥ केवट घाटकेर घटवा-रा । जो कोइ जाय उतारै पारा ॥ नावपर बैठि कन्या नित रहई । आपन कर्म सिखा-वत तहई ॥ सुख सुख सों केतिक दिन गयऊ । यक दिन केवट व्याधित भयऊ ॥ केवट व्याधित घरहि सिधावा । घाट सौंपि कन्या कहँ आवा ॥ कन्या बैठि अपने स्वभाउ । विधि संयोग पराशर मुनि आउ ॥ पराशर मुनि आसनको जाय । देखा घाट केवट नहिं आय ॥ फिर देखा कन्या यक आही । ऋषी वचन भाषा तेहि पाही ॥ काहिनाकि कन्या देउँ कछु तोहिं । नदी पार

T

उतारतैं मोहिं॥ कन्या कहै अन्य ना लेउँ। बैठहु नाव पार करि देउँ॥ पिता दुखित है मोर गोसाईं। दया करो व्याधि क्षय जाई॥ बोले ऋषी भयउ सब काजू। पिता तोहार नीकभो आजू॥ तुम अपने मन शोच न मानहु। वचन हमार सत्यकै जानहु॥ पिता तोहार नीक ह्वैजाई। अवश्य रोग व्याधि क्षय जाई॥

दोहा॥

इतना भाषि ऋषीश्वर, बैठि नाव पर जाय।
कन्या बैठी डाँड लेइ, दीन्हेसि नाव चलाय॥

चौपाई॥

थोरी दूर नाव जब जाई। उत्तम बात ऋषै चित आई॥ उत्तम घडी अहै यहबारा। और

त्रिया नहिं साथ हमारा ॥ यह बेरा जो सोरति माने। ऐसो सुत होय लोक तिहुँजाने ॥ चारिवेद मुख पाठ बखाने। अष्टादश पुराण सो जाने ॥ तब पारस मुनि कह्योबिचारी ॥ सुनो बचन केवटकी बारी । जगमों तोहार यश रहही। मानो वचन जौन हम कहही ॥

दोहा ॥

हृदय बिचारेउपरम मुनि,कहावचनपरमान।
सुंदरि सुनहु सुलोचनी, देहु मोहिं रतिदान॥

चौपाई ॥

यह सुनि कन्या बहुत लजानी। ऋषि सन तब बोली मृदुबानी ॥ देह गन्ध मोर मच्छ समाना । हम अबला कछु भेद न जाना ॥

T

दोहा ॥

काहदेखि मोहिं रीझेउ,कीन्हा चहहुप्रसंग।
तुम्हैंयोग हमनाहिंहैं,केहि बिधि दें हम अंग॥

चौपाई ॥

तब ऋषि बोले वचन रसाला । यह जनि शोच करसि जन बाला ॥ हम आज्ञा दीन्हा भगवती । होहु तुरन्त तुम यौबनवती । काया तोहारि सुगन्ध बसाई । बास न चार कोस लग जाई ॥ योजन गन्ध नाम तोहि दीन्हा । होहु तुरंत हम आज्ञा कीन्हा ॥ ऋषी बचनको मेटै पारा। भयउ तुरन्त न लागेउबारा ॥ कह्यो किरति देहुराजकुमारी। अबरोमैंकछुकहोंबिचारी ॥

दोहा ॥

सुन्दरि कहा ऋषीश्वर, तुम आज्ञा शिरलेउँ।
दोनों दिशा मनुष्य हैं, कैसे कै रति देउँ ॥

चौपाई ॥

तब ऋषि अपने मनहि बिचारी । कुहिरा जन्म लीन्ह औतारी ॥ अस कुहिरा भो कहा न जाई । दिनते तुरित रात होइ आई ॥ ऋषि अति हर्षवंत मन कीन्हा । रतिरस दान नावपर कीन्हा ॥ रतिदान दिये छन यक भयऊ। व्यासको जन्म तेहि ठौर भयऊ॥ जन्म भये वृद्ध भै काया । कही न जाय विष्णु की माया ॥ अर्जुन सुनो कहैं भग वाना । चारि वेद मुख पाठ बखाना ॥

T

दोहा ॥

व्यासजन्मतोहिंभाषेंऊं,सुन अर्जुन चितलाय
जन्म जन्मकर पातक, कथापढ़तक्षयजाय॥

चौपाई ॥

सुन अर्जुन तिनके व्यवहारा। ऋषी उतर गै पहिलेपारा ॥ व्यासदेव तब बैठे जाई। प्रथम ज्योतिकी स्तुति लाई ॥ ऋषी सुन्दरी के रस लीन्हा। कन्यारूप ताहिको दीन्हा ॥ मुनि स्नान को कीन्ह पयाना। ताकर बिदा कीन्ह सनमाना ॥ सो कन्या अपने घरजाई। पराशर ऋषि तब बैठेउजाई ॥

दोहा ॥

दासराम नृप कन्या, मीन गर्भ औतार ॥
यहिविधि जन्मेव्यासमुनि, सुनहूकुन्तिकुमार

चौपाई ॥

तब अर्जुन उठिकै करजोरी । पारब्रह्म सुन बिनती मोरी ॥ अष्टादश पुराण मुनि ब्यास बखाना । ताकर अर्थ कहौ भगवाना । आदि पुराण कवन प्रभु भाषा । अष्टादश बेवरा करि राखा ॥

दोहा ॥

आदि पुराणजोभाषेऊ, मिटे मोरअब शोक।
अष्टादश पुराणमों, केतिक हैं श्लोक ॥

चौपाई

सुन अर्जुन जो पूछ्यो मोहीं । एकएक कहि भाषों तोंहीं ॥ अष्टादश पुराण प्रभुभाषहिं । मनमों अर्जुन ज्ञानसम्भाराहिं ॥ प्रथमैब्रह्मपुराणजो भयऊ । दशसहस्र श्लोकतेकियऊ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पद्मपुराण जो कीन्ह अनूपा । पंचावनसहस्र श्लोक निरूपा ॥ तेहिपाछे भो विष्णुपुराना। अशी सहस्र श्लोक बखाना ॥ शिवपुराण नवहीं निरमाई । दश सहस्र श्लोक वना ई ॥ श्रीभागवत पुराण बखाना । तीस स हस्र श्लोक बखाना ॥ पुनि नारद पुराण जो भाषा । पैंतालिस सहस्र श्लोक तेहि राखा ॥ पुनि स्कन्द पुराण बनावा । पन्द्रह सहस्र श्लोक बनावा ॥ मार्कण्डेय पुराण जो आही । नौ सहस्र श्लोक तेहि मांही ॥ तेहि पाछे भयो अग्निपुराना । तेरह सहस्र श्लोक बखाना । पुनि भविष्य पुराण उप राजा । दश सहस्र श्लोक बिराजा ॥ वायव्य पुराण लिखै मन कीन्हा । पन्द्रह सहस्र

श्लोक तेहि कीन्हा ॥ लिङ्गपुराण सुनो धनुधारी। बारह सहस्र श्लोक विचारी ॥ पद्म पुराण सुनो हम पाही। चौदह सहस्र श्लोक तेहि माही ॥ ब्रह्म पुराण सुन कुन्तिकुमारा। चौबिस सहस श्लोक सँवारा ॥ कूर्म पुराण कह्यो भगवाना। सत्तर सहस्र श्लोक बखाना ॥ बामन पुराण नाम जो आही। दश सहस्र श्लोक तेहिमांही। गरुड़ पुराण सुनो बिरतंता। बीस सहस्र श्लोक भगवन्ता ॥ ब्रह्माण्ड पुराण अठारह आही। बारह सहस्र श्लोक तेहि मांही ॥

दोहा ॥

एक एक करि भाषेऊ, पुनि कीन्हा सबथोक।
अष्टादश पुराणमों, चारिलक्ष श्लोक ॥

T

चौपाई ॥

अष्टादशपुराण व्यास मुनि कीन्हा । अर्जुन सो तो सों कहि दीन्हा ॥ चारिलक्ष श्लोक तेहि मांहीं । इनमों घाट बाढ़ कछु नाहीं ॥ जो कोई घाट करै इन्हमांही । लिखन हार शिर दोष पराही ॥ सुन अर्जुन तो सों मोरि दाया । तन मन एक दुसरि ना माया ॥ तेहि कारण कछु अन्त न राखों । उत्पति प्रलय जहां लगि भाखों । जीवरूप सबके घट रहउं । सुन अर्जुन तोसों सति कहउं ॥ बड़े जीवमों बड़ो प्रकाशा । छोट जीवमों छोट प्रकाशा ॥ गाढ़ परे तो सुमिरे नाउं । तेही ठौर प्रगट होजाऊं ॥ सङ्कट काट उबारोंताही । नहिंपतिआसि कहोंतोहिंपाही ॥

T

दोहा ॥

गुप्त कथा सब जानेऊँ, निर्मल भयो शरीर।
सङ्कटमों केहि राखेऊ, सो भाषो यदुवीर॥

चौपाई ॥

सुन अर्जुन जेहि संकट परई। निश्चय नाम मोर चित धरई॥ तेहिकरसंकट टार बनाई। दुष्ट मारि तेहि लेउँ छोड़ाई॥ जेहिजेहि कर मैं संकट टारा। सो तोहि भाषों कुंति कुमारा॥ एक समय विधि औसरसाजा। पानी पियन गयो गजराजा॥ तृषावंत जल भीतर जाई। ग्राहएक तहँधराबनाई॥ गजकर गर्व चला कछु नाहीं। काल समान धरा अस ताहीं॥ खैंचि ग्राह लैचला नि-दाना। गजकर मृत्यु आइ तुलाना॥ अ.

T

तिह कष्ट गजभयो दुखारी । महाबिकल है कहेसि पुकारी ॥ कृपासिंधु मोहिंलेहु उबारी । परेउ अथाह अगम जल भारी ॥ हम सत्यभामा खेलहिं पाँसा । पुरी द्वारका वैकुण्ठ निवासा ॥ यहि अन्तर गजराज पुकारी । सत्यभामा कह पाँसा डारी ॥ सत्रह सहस्र योजन गजराजा । ताकी कैसे सुनो अवाजा ॥ तब सत्यभामा कहा रिसाई । खेलत माया करो गोसाँई ॥ कोहि राखेउ को है इह ठाईं । भूलि जायके करो उपाई ॥ पाँसा मोर परा तुम देखा । मैंअपने खेलव करिलेखा ॥

दोहा ॥

हँसि बोलेश्रीकृष्णजीतुम जनिमानहुमन्द ।

ग्राहगह्यागजराजकहँ, ताकरकाटौं फंद ॥

चौपाई ॥

तब सत्यभामा अचरज माना । यह सब झूठ अहै भगवाना ॥ मैं जानतहौं तुम्हें गोपाला । दया धर्म तुमही नँदलाला ॥ सत्रह सहस्र योजन गजराजा। ताकर कैसे सुनो अवाजा ॥ जो तव सत्य अहै यह बानी । मोहिं देखावहु शारंगपानी ॥ तबहीं गरुड़ हँकारेउ बीरा । तेहि चढि गयो सरोवर तीरा ॥ ग्राह परा देखा जलमांहों । चक्रघाव सों मारा ताही ॥ हस्ती ठाढ़ अहै जल तीरा । थर थर कांपत सकल शरीरा ॥ जब सत्यभामा देखा जाई । तब बहुबिधिकै स्तुति लाई॥ द्रौपदी कै लज्जा मैं राखी । सो अर्जुन

T

तुम देखा आंखी॥ संकटते प्रह्लाद उबा रा ॥ सो तुम जानो कुंतिकुमारा ॥ हरिणा कुशको उदर बिदारा। आँतनिकाल गले मों डारा ॥ मार्कंडेय सुनो हम पाही । ब्रह्मा कर नाती सो आही ॥ तीनि लोक जब परलय भयऊ। बूडै लाग याद मोहिं कियऊ ॥ कहेउकि बूडेउँ शारंगपानी । गर्भांतर राखेउँ तेहि आनी ॥ धन्य गरुड बिनता सुत राखा ।आशी युग मोहिं पीठपर राखा॥ तेहि ऊपर तन सके न संभारी । अक्षय बट तर दीन्ह उतारी ॥ ॥

दोहा ॥

व्याकुल भये बिनतासुत, जानेउमनमहँतेहि
तेहँ पुनि राखेउ गर्व महा, बैठ रहा बटतेहि ॥

T

चौपाई ॥

अर्जुन कहै सुनो यदुराई । मोरे चित कछु शंका आई ॥ तुमरे कैसे उदर समाना । संशय बड उपजै भगवाना ॥ सुन अर्जुन तोहिं कहौं बुझाई । सब मोंमें मोहिं सबै समाई ॥ सात समुद्र पृथिवी नौ खण्डा । मेरु सुमेरु सकल ब्रह्मण्डा ॥ कहँ लगि सृष्टि कहौं तोहिं पाहीं । तीन लोक मोरे ऊदर मांहीं ॥ पक्षी एक गरुड ते भाखा । पूछेउ स्वामी कैसे तुम राखा ॥ डार दिये मुख ऊदर माहीं । सो देखो मोरे घटमांहीं । भक्त भाव मैं जानेउँ तोरा ॥ औ मौसी सुत भाइ तुमोरा । तुमसन भेद कहा समुझाई । अवर के बूते जानि न जाई ॥

T

अर्जुन कहै सत्य यदुराई। मैं तोरा मौसी सुत भाई॥ पायउँ भेद अज्ञानहि मेटी। कुंती उग्रसेन की वेटी॥

दोहा॥

अर्जुन कहा गोसाइँजू, सो तुम कहौ उपाय।
तुम्हरेचरणकमलतजि,चित्तअन्तनहिंजाय

चौपाई॥

अर्जुन बचन सत्य सुन मोहीं। मैं अपना हितु जानो तोहीं॥ बहुत भांति का कहों बुझाई। नाम मोर भजही चित लाई॥ जो मम नाम भजै चित लाई। तेहि समान अर्जुन ना कोई॥ संकट कोटि जो सहै शरीरा। नाम मोर नहिं छांडै

T

बीरा ॥ धन औ द्रव्य न मनमों जाना। दुख सुखकै शंका नाहिं आना॥ एक जन्म दुख पावै सोई। कोटिन जन्म ताहि सुख होई॥ चित दे नाम जपै जो बीरा। ताके पाप न रहैं शरीरा॥ नाम ब्रह्म ज्योति चित जाना। सो प्राणी है देव समाना॥ अर्जुन सांच सुनो हम पाही। नाम भजन बिनु अवर न आही॥ कोटिन तीरथ व्रत जो जाना। गया प्रयाग पिण्ड करै दाना॥ नाहिंन अर्जुन नाम समाना। कोटि सुमेरु सोन देइ दाना॥ नाहिं न अर्जुन नाम समाना। काशी क्षेत्र करै स्नाना॥ नाहिंन अर्जुन नाम समाना। गंगासागर करै स्ना-ना॥ नाहिंन अर्जुन नाम समाना। कोटिन

T

देव जाय स्थाना ॥ नाहिंन अर्जुन नाम समाना। कोटिन क्षेत्र करै स्नाना ॥

दोहा ॥

उदय अस्त सब जाके, चारि बेद मुख जान।
कोटि कोटि गुण जानै, नाहिंन नाम समान ॥

चौपाई ॥

सुनहू अर्जुन पाण्डु कुमारा। नामकि महिमा लिखै बिचारा ॥ वनस्पतीकै कलम बनाई। घास पात सब दीन्ह जराई ॥ राख समेटि समुद्र मों बोरी। मथन कीन्ह बहुबिधि विस्तारी ॥ सात समुद्र कीन्ह मसिहानी। धरती कागज कीन्ह भवानी ॥ लिखनभूमि सबगई सिराई। नामकि महिमाकहीनजाई॥

T

दोहा ॥

इतनाकीन्ह्योसरस्वति, सुन अर्जुनचितलाय
महिमा मोरि न जानै कोटिन करै उपाय ॥

चौपाई ॥

अबसुन अर्जुन कहौं बुझाई। महिमामोरि
भक्त कछु पाई ॥ सो भवसागर जानैकैसा।
कुसुम रंग आम्रपुर जैसा ॥ जो कछुतीन
लोक मों आही। एको दृष्टि न आवै ताही ॥
सप्त पताल अपर ब्रह्मण्डा। सात द्वीप
पृथिवी नौ खण्डा ॥ तीनलोक अर्जुनयह
आही। सो दर्पण अस देखे ताही ॥ चांद
सूर्य दीपक समजाने। कन्द्रप कहँ मर्कट
सममाने ॥ कुबेर समान धनी कोउ नाहीं।

T

दुखिया सम जाने चितमाहीं ॥ उञ्चास कोटि मारुत है कैसा । नासिका पवन बहत है जैसा ॥ अर्जुन सुनो कलपतरु सोई। जानो एक वृक्ष है सोई ॥ सात समुद्र नीरजल भारा । सो जानो सतचुल्लूधारा ॥ इन्द्र समान राउनहिं आही । रंक समान बुझै असताही ॥ गिरि सुमेरु को मनमों कहई । ढ़ेला एक धरा जनु अहई ॥ अवरो रत्न जानही कैसा ॥ मशक एकबैठो है जैसा ॥ जलमों एक कीट जनु आही । इतना दृष्टि न आवै ताही ॥ वृहरुपतिको मूरुखकै माने । पुहुप समान तारेगणजाने ॥ वरुणरायको मनमों कहई। जलमों कीट जन्तुजस अहई ॥ इतना दृष्टि न आवै ताही । नर

बपुरा केहि गिनती माही ॥ अर्जुन सुनो कृष्ण अस कहई । नाम भजनते यह कछु लहई ॥ महिमा मोरि जो जाने कोई । ताकरि दृष्टि सुनो असि होई ॥

दोहा ॥

महिमा मोरिजोजानै, मोहिं समानहै सोय ।
सब मिथ्या करि जानेऊ, दृष्टिन आवै कोय ॥

चौपाई ॥

तब उठि अर्जुन स्तुति लाई । वचन हमार सुनो यदुराई ॥ ऐसा मों कछु चित ना आही । नामकि महिमा केहि विधि पाही ॥ सो जगजीवन कहो बुझाई । जेहिते चित्त

अंत नाजाई ॥ जेहिं विधि होयमोर उद्धारा। सो मोहिं भाषो नन्द कुमारा ॥

दोहा ॥

माया तोहारिन जानो, केहिविधिसेवोंतोहिं। यह भवसागर स्वामी, पार उतारहु मोहिं ॥

चौपाई ॥

अर्जुन सत्यसुनो हम पाहीं। तुम सम भक्त जगतमों नाहीं ॥ ताते मोर कछु अंत ना माया। अन्तकाल चित राखा दाया ॥ नाम मोर हिरदयमहँ जानहु। अवर बात कछुचित ना आनहु ॥ नामकि महिमा पूछउ मोंहीं। सो अर्जुन मैं भाष्यों तोहीं ॥ मोर भाव